फसलों में उपज बढ़ाने के लिए जरूरी नुक्शे

सतपाल सिंह[1], विपुल बेनिवाल[1] एवं नवीन राव[2]
[1]भाकृअनुप– केन्द्रिय कपास अनुसंधान केन्द्र, क्षेत्र कार्यालय सिरसा, (हरियाणा)
[2]हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, (हरियाणा)
*संवादी लेखक का ई–मेलः satpalsingh070@gmail.com

कृषि के क्षेत्र में लगातार नयी तकनीकों का आगमन हो रहा हैं। अतः किसान सभी प्रकार की फसलें जैसें– अनाज, दलहन, तिलहन, सब्जियां आदि से प्रति एकड अच्छी पैदावार लेने के लिए निम्नलिखित नुक्शे को अपनी दैनिक कृषि क्रियाओं में शामिल करके इनकी उपज में ऐच्छिक वृद्धि कर सकते हैं

बिजाई से पहले ध्यान देनें योग्य बातें–

1. किसान अपने खेत की मिटटी का परीक्षण करवायें और मिट्टी की अनुकुलता के अनुसार फसलों का चयन करें।
2. शहरों के नजदीकी क्षेत्रों में फल, फूल व सब्जियों की खेती करें। ताकि समय पर इनको बाजार में पहुचाया जा सकें।
3. फसल चक्र को ध्यान में रखकर फसलों का चुनाव करें।
4. शुष्क जलवायु वाले क्षेत्रों में मिश्रित खेती को अपनायें एवं कम अवधि वाली फसलों का चुनाव करें।
5. फसलों के चयन बाद अच्छे उत्पादन के लिए उन्नत किस्मों, जो कीट एवं रोग रोधी हों, का चुनाव करें।
6. चुनाव की गई उन्नत किस्मों का प्रमाणित बीज प्रमाणित संस्था से ही खरीदें।
7. फसलों के प्रमाणित बीजों को राईजोबियम कल्चर, कीटनाशी, फंफूदनाशी से उपचारित करके ही बुवाई करें।
8. ग्रीष्मकालीन गहरी जुताई करना ना भुलें।
9. गोबर की खाद डालने के बाद 2–3 अच्छी जुताई कर खाद मिटटी में मिला दें ।
10. मृदा स्वास्थ्य कार्ड के हिसाब से सन्तुलित मात्रा में खाद व उर्वरक बिजाई पूर्व डालें।
11. अपनी सभी प्रकार की फसलों की बिजाई समय पर करें।
12. बीज की मात्रा कृषि विभाग की सिफारिश के अनुसार रखें।

बिजाई के बाद ध्यान देनें योग्य बातें–

1. फसलों की बुवाई उचित नमी होने पर कतारों में करें व कतार से कतार की दूरी कृषि विभाग की सिफारिश के अनुसार रखें।
2. ढलान वाली भूमि पर फसलों की बुवाई ढाल के समानान्तर यानि टेढ़ी दिशा में करें।
3. सुबह–शाम को खेत का निरीक्षण अवश्य करें।
4. आपातकालीन दशाओं से बचने के लिए सभी फसलों का बीमा अवश्य करवायें।
5. फसलों में निराई–गुडाई समय से कर देनी चाहिए। यदि खरपतवारों की समस्या अधिक है तो रासायनिक खरपतवारनाशी का छिड़काव करें।
6. फसलों की सिंचाई नियमित अन्तराल से करतें रहें और सिंचाई की अच्छी सुविधा नही होने पर फसल की क्रान्तिक अवस्थाओं पर सिंचाई अवश्य करें।
7. फल, फूल व सब्जियों की खेती में बूंद–बूंद व फव्वारा सिंचाई विधि का प्रयोग कर पानी की बचत कर सकतें हैं।
8. कीट निगरानी एवं नियंत्रण के लिए खेत में प्रकाश पाश (लाईट ट्रेप) व फिरोमोन पाश (फिरोमोन ट्रेप) लगायें।
9. कीट एवं बीमारी नियंत्रण के लिए जैविक रसायनों का ज्यादा से ज्यादा इस्तेमाल करें तथा कीटनाशकों का उपयोग कृषि विशेषज्ञों से परामर्श के बाद करें।

फसल प्रबन्धन व सामान्य निर्देश–

1. आधुनिक खेती के रूप में फल, फूल व सब्जियों की खेती पोलीहाउस या ग्रीनहाउस में करें।
2. किसान भाई अपने द्वारा उपयोग किये जाने वाले सभी आदानों का तिथि अनुसार रिकार्ड रखें।
3. फसलों में किसी भी प्रकार की समस्या पर नजदीकी कृषि विभाग कार्यालय में सम्पर्क करें।
4. कृषि विभाग कार्यालय के अलावा भी किसान भाई अपने फोन से 18001801551 नम्बर पर कृषि विशेषज्ञों से जानकारी ले सकतें हैं।
5. समय समय पर कृषि विभाग, कृषि विश्वविद्यालय, कृषि विज्ञान केन्द्र व अन्य केन्द्रीय व राजकीय अनुसंधान संस्थानों के प्रर्दशनी प्लाट का भ्रमण कर नयी–नयी तकनीकों के बारें में जानकारी लेते रहें।
6. कृषक व कृषि से संबन्धित विभागों द्वारा लगायें जाने वाले किसान मेले व किसान गोष्ठी में भाग लेकर अधिक से अधिक जानकारी प्राप्त करें।

आप जिस तरह बोलते हैं, बातचीत करते है, उसी तरह लिखा भी कीजिए। भाषा बनावटी नहीं होनी चाहिए।

– महावीर प्रसाद द्विवेदी

हिन्दी आज साहित्य के विचार से रूढ़ियों से बहुत आगे है। विश्व साहित्य में ही जाने वाली रचनाएँ उसमें हैं।

– सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'